Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

भारत विभाजन (1947) का हरियाणा क्षेत्र पर सामाजिक एवं आर्थिक प्रभाव: एक ऐतिहासिक अध्ययन

सुहावना
शोधार्थी, इतिहास विभाग बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय अस्थल बोहर रोहतक।
(Reg. No = 23-BMU-7231)
डॉ. राजबीर सिंह गुलिया
प्रोफेसर, इतिहास विभाग बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय अस्थल बोहर रोहतक।

सार
भारत का विभाजन 1947 में आधुनिक भारतीय इतिहास की एक अत्यंत महत्वपूर्ण एवं त्रासदपूर्ण घटना के रूप में उभरा, जिसने न केवल राजनीतिक भूगोल को परिवर्तित किया, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संरचनाओं पर भी गहरा प्रभाव डाला। इस ऐतिहासिक घटना के परिणामस्वरूप लाखों लोग विस्थापित हुए, जिनमें से बड़ी संख्या पश्चिमी पंजाब से पूर्वी पंजाब और वर्तमान हरियाणा क्षेत्र में आकर बस गई। प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य हरियाणा क्षेत्र के विशेष संदर्भ में भारत विभाजन के सामाजिक एवं आर्थिक प्रभावों का समग्र और विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है। इस अध्ययन में यह समझने का प्रयास किया गया है कि विभाजन के कारण हरियाणा में जनसंख्या संरचना, सामाजिक संबंधों, सांस्कृतिक पहचान और आर्थिक गतिविधियों में किस प्रकार के परिवर्तन हुए। विशेष रूप से शरणार्थियों के आगमन ने क्षेत्र के सामाजिक ढांचे को पुनर्गठित किया, जिसमें नई जातीय एवं सामुदायिक संरचनाओं का निर्माण हुआ। साथ ही, विभिन्न समुदायों के बीच प्रारंभिक तनाव और संघर्ष के बावजूद समय के साथ सहअस्तित्व और समन्वय की भावना विकसित हुई, जिसने सामाजिक स्थिरता को पुनर्स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आर्थिक दृष्टि से, विभाजन के परिणामस्वरूप भूमि के पुनर्वितरण, कृषि प्रणाली में सुधार तथा व्यापार और उद्योग के विकास को गति मिली। शरणार्थियों द्वारा अपनाई गई नवीन कृषि तकनीकों और उद्यमशीलता ने हरियाणा की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने में योगदान दिया। इसके अतिरिक्त, पुनर्वास नीतियों और सरकारी हस्तक्षेपों ने आर्थिक पुनर्निर्माण की प्रक्रिया को सशक्त किया, यद्यपि प्रारंभिक वर्षों में संसाधनों की कमी, प्रशासनिक चुनौतियाँ और सामाजिक समायोजन जैसी समस्याएँ भी सामने आईं। यह अध्ययन मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों जैसे ऐतिहासिक अभिलेखों, पुस्तकों, शोध–पत्रों तथा सरकारी रिपोर्टों पर आधारित है और वर्णनात्मक तथा विश्लेषणात्मक पद्धति का अनुसरण करता है।

मुख्य शब्दः भारत विभाजन, हरियाणा, शरणार्थी, सामाजिक परिवर्तन, आर्थिक प्रभाव।

प्रस्तावना

भारत का विभाजन 1947 केवल एक राजनीतिक घटना नहीं था, बल्कि यह एक व्यापक मानवीय, सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन की प्रक्रिया थी, जिसने भारतीय उपमहाद्वीप के इतिहास की दिशा को निर्णायक रूप से प्रभावित किया। यह विभाजन ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन की समाप्ति के साथ जुड़ा हुआ था, जिसके परिणामस्वरूप भारत और पाकिस्तान दो स्वतंत्र राष्ट्रों के रूप में अस्तित्व में आए। इस प्रक्रिया के दौरान धार्मिक आधार पर सीमाओं का निर्धारण किया गया, जिसके कारण करोड़ों लोगों को अपने पारंपरिक निवास स्थानों को छोड़कर नए क्षेत्रों में पलायन करना पड़ा। यह विश्व इतिहास के सबसे बड़े जबरन जनसंख्या विस्थापनों में से एक माना जाता है।[1] पंजाब इस विभाजन का केंद्र बिंदु था, जहाँ व्यापक स्तर पर साम्प्रदायिक हिंसा, असुरक्षा और सामाजिक विघटन देखने को मिला। वर्तमान हरियाणा, जो उस समय अविभाजित पंजाब का हिस्सा था, इस पूरी प्रक्रिया से गहराई से प्रभावित हुआ। विभाजन के परिणामस्वरूप हरियाणा क्षेत्र में पश्चिमी पंजाब (अब पाकिस्तान) से आए हिंदू और सिख शरणार्थियों का बड़े पैमाने पर आगमन हुआ। यह आगमन केवल संख्या की दृष्टि से महत्वपूर्ण नहीं था, बल्कि इसने क्षेत्र की सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक स्वरूप और आर्थिक गतिविधियों को भी पुनर्परिभाषित किया।[2]

हरियाणा में अचानक बढ़ी हुई जनसंख्या ने संसाधनों पर दबाव उत्पन्न किया, जिसके कारण आवास, रोजगार और खाद्य सुरक्षा जैसी समस्याएँ सामने आईं। साथ ही, स्थानीय समुदायों और नवागंतुक शरणार्थियों के बीच प्रारंभिक स्तर पर समायोजन की चुनौतियाँ भी देखी गईं। किंतु समय के साथ इन शरणार्थियों ने अपने कौशल, परिश्रम और उद्यमशीलता के माध्यम से न केवल स्वयं को स्थापित किया, बल्कि क्षेत्रीय विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। आर्थिक दृष्टि से, विभाजन के बाद भूमि का पुनर्वितरण एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया थी। पाकिस्तान चले गए मुस्लिम जमींदारों की भूमि को शरणार्थियों में बाँटा गया, जिससे कृषि संरचना में परिवर्तन आया। शरणार्थियों द्वारा अपनाई गई नई कृषि तकनीकों, व्यापारिक गतिविधियों और लघु उद्योगों ने हरियाणा की अर्थव्यवस्था को नई दिशा प्रदान की।[3] इस प्रकार, विभाजन एक ओर जहाँ विनाश और विस्थापन का प्रतीक था, वहीं दूसरी ओर इसने पुनर्निर्माण और विकास की नई संभावनाओं को भी जन्म दिया।

---

[1] बुटालिया, उर्वशी. (1998). खामोशी का दूसरा पक्षः भारत विभाजन की आवाजें. ड्यूक यूनिवर्सिटी प्रेस, डरहम, पृ. 40–41.

[2] मेनन, रितु, एवं भसीन, कमला. (1998). सीमाएँ और सरहदें: भारत विभाजन में महिलाएँ. काली फॉर वुमेन, नई दिल्ली, पृ. 55–56.

[3] सिंह, जसबीर. (2010). भारत में शरणार्थी और पुनर्वास. रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, पृ. 85–86.

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2
ISSN No: 3049-4176

भारत विभाजन और हरियाणाः एक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

1947 में भारत के विभाजन के समय वर्तमान हरियाणा क्षेत्र, अविभाजित पंजाब प्रांत का अभिन्न हिस्सा था। ब्रिटिश शासन के अंत के साथ ही जब भारत और पाकिस्तान दो स्वतंत्र राष्ट्रों में विभाजित हुए, तब पंजाब को भी धार्मिक आधार पर दो भागों में बाँट दिया गया, पूर्वी पंजाब भारत में और पश्चिमी पंजाब पाकिस्तान में सम्मिलित हुआ। यह विभाजन केवल भौगोलिक सीमाओं का निर्धारण नहीं था, बल्कि यह सामाजिक, सांस्कृतिक और मानवीय स्तर पर एक गहरे संकट का कारण बना।[4] विभाजन की प्रक्रिया अचानक और असंगठित थी, जिसके परिणामस्वरूप व्यापक स्तर पर हिंसा, भय और असुरक्षा का वातावरण उत्पन्न हुआ। पश्चिमी पंजाब में रहने वाले हिंदू और सिख समुदायों को अपनी जान बचाने के लिए अपने घर–बार छोड़कर भारत की ओर पलायन करना पड़ा, जबकि पूर्वी पंजाब और उससे जुड़े क्षेत्रों से मुस्लिम समुदाय पाकिस्तान की ओर चला गया। इस प्रकार, यह एक द्विपक्षीय जनसंख्या आदान–प्रदान था, जिसे इतिहास में सबसे बड़े जबरन विस्थापन के रूप में देखा जाता है।

हरियाणा, जो उस समय पूर्वी पंजाब का हिस्सा था, इस विशाल जनसंख्या प्रवाह का एक महत्वपूर्ण केंद्र बन गया। रोहतक, करनाल, हिसार, गुड़गांव और अंबाला जैसे क्षेत्रों में बड़ी संख्या में शरणार्थी आकर बसे। इन शरणार्थियों में अधिकांशतः वे लोग शामिल थे, जो पश्चिमी पंजाब के विकसित शहरी और कृषि क्षेत्रों से आए थे और अपने साथ कृषि कौशल, व्यापारिक अनुभव तथा सांस्कृतिक विविधता लेकर आए।[5] इस अचानक जनसंख्या वृद्धि ने हरियाणा की जनसंख्या संरचना में तीव्र परिवर्तन उत्पन्न किया। कई स्थानों पर आबादी का घनत्व बढ़ा, जबकि कुछ क्षेत्रों में पुराने निवासियों का विस्थापन भी हुआ। साथ ही, धार्मिक और सामाजिक संरचना में भी परिवर्तन देखने को मिला, जिससे नए सामाजिक संबंधों और सामुदायिक संतुलन की आवश्यकता उत्पन्न हुई। इतिहास के इस चरण में हरियाणा केवल एक भौगोलिक क्षेत्र नहीं रहा, बल्कि वह पुनर्वास, पुनर्निर्माण और सामाजिक समायोजन की प्रक्रिया का एक जीवंत उदाहरण बन गया। विभाजन के कारण उत्पन्न यह ऐतिहासिक पृष्ठभूमि आगे चलकर हरियाणा के सामाजिक और आर्थिक विकास की दिशा निर्धारित करने में महत्वपूर्ण आधार सिद्ध हुई।[6]

---

[4] टैल्बोट, इयान, एवं सिंह, गुरहरपाल. (2009). भारत का विभाजन. कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, पृ. 12–13.

[5] कौर, रविंदर. (2007). 1947 के बादः दिल्ली में पंजाबी प्रवासियों के बीच विभाजन की कथाएँ. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, पृ. 72–73.

[6] सिंह, जसबीर. (2010). भारत में शरणार्थी और पुनर्वास. रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, पृ. 88–89.

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2
ISSN No: 3049-4176

सामाजिक प्रभाव

भारत विभाजन का हरियाणा के सामाजिक जीवन पर अत्यंत गहरा और बहुआयामी प्रभाव पड़ा। यह प्रभाव केवल जनसंख्या के स्थानांतरण तक सीमित नहीं था, बल्कि उसने समाज की संरचना, सामुदायिक संबंधों, सांस्कृतिक पहचान और पारिवारिक जीवन के स्वरूप को भी व्यापक रूप से बदल दिया। विभाजन के बाद हरियाणा क्षेत्र में बड़ी संख्या में ऐसे शरणार्थी आकर बसे जो पश्चिमी पंजाब से अपने घर, जमीन, संपत्ति और सामाजिक आधार को छोड़कर आए थे। इस बड़े पैमाने पर हुए विस्थापन के कारण जनसंख्या संरचना में अचानक परिवर्तन हुआ।[7] अनेक कस्बों और गांवों में नई आबादी के बसने से स्थानीय समाज का पारंपरिक संतुलन प्रभावित हुआ। धार्मिक संरचना में परिवर्तन आया, क्योंकि जो समुदाय एक क्षेत्र से चले गए उनकी जगह दूसरे समुदायों ने ले ली। इससे सामाजिक संरचना में नए प्रकार की विविधता उत्पन्न हुई। शरणार्थियों के आगमन से हरियाणा के कई क्षेत्रों में जनसंख्या घनत्व बढ़ा, नए मोहल्ले और बस्तियां बनीं और पुराने सामाजिक ढांचे के भीतर नए वर्ग, पेशे और जीवनशैली जुड़ती चली गईं। इस प्रकार विभाजन ने हरियाणा के समाज को स्थिर और पारंपरिक स्वरूप से निकालकर अधिक गतिशील, मिश्रित और परिवर्तनशील बना दिया।

सामुदायिक संबंधों पर भी विभाजन का प्रभाव गहरा था। विभाजन के समय पंजाब और उससे जुड़े क्षेत्रों में व्यापक हिंसा, भय, अविश्वास और असुरक्षा का वातावरण था। इन परिस्थितियों ने लोगों के बीच पारंपरिक विश्वास संबंधों को कमजोर किया। हरियाणा में भी विभाजन की स्मृतियां लंबे समय तक सामाजिक मनोविज्ञान का हिस्सा बनी रहीं।[8] जो लोग अपने मूल निवास स्थानों से उजड़कर आए थे, वे अपने साथ पीड़ा, आघात और असुरक्षा की भावना भी लेकर आए। दूसरी ओर स्थानीय समुदायों के लिए भी यह स्थिति नई थी, क्योंकि उन्हें अचानक बड़ी संख्या में आए विस्थापित लोगों के साथ संसाधनों, स्थान और अवसरों को साझा करना पड़ा। प्रारंभिक चरण में इस कारण सामाजिक तनाव, दूरी और समायोजन की समस्याएं सामने आईं। परंतु समय के साथ सहयोग, सहानुभूति और सहअस्तित्व की भावना विकसित हुई। स्थानीय समाज और शरणार्थी समुदायों के बीच वैवाहिक, व्यावसायिक और सामाजिक संबंध बनने लगे, जिससे एक नए सामाजिक समन्वय का निर्माण हुआ। यह परिवर्तन इस बात का प्रमाण है कि विभाजन ने जहां एक ओर समाज को आघात पहुंचाया,

---

[7] टैल्बोट, इयान, एवं सिंह, गुरहरपाल. (2009). भारत का विभाजन. कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, पृ. 18–19.

[8] पांडेय, ज्ञानेंद्र. (2001). विभाजन को याद करनाः हिंसा, राष्ट्रवाद और इतिहास. कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, पृ. 34–35.

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

वहीं दूसरी ओर उसने नए सामाजिक संबंधों और सामुदायिक पुनर्गठन की प्रक्रिया को भी जन्म दिया।

सांस्कृतिक स्तर पर विभाजन ने हरियाणा को एक नए प्रकार की बहुलता प्रदान की। पश्चिमी पंजाब से आए शरणार्थी अपने साथ केवल भौतिक वस्तुएं ही नहीं लाए, बल्कि वे अपनी भाषा, लोकस्मृतियां, खान–पान, पहनावा, धार्मिक परंपराएं, पारिवारिक संस्कार और सामाजिक व्यवहार भी साथ लाए। इन तत्वों ने हरियाणा की स्थानीय संस्कृति के साथ संपर्क स्थापित किया और धीरे–धीरे एक मिश्रित सांस्कृतिक वातावरण का निर्माण हुआ।[9] कई नगरों और कस्बों में पंजाबी भाषा और बोलचाल का प्रभाव दिखाई देने लगा। भोजन की आदतों, विवाह संस्कारों, त्योहारों के मनाने के ढंग और सामाजिक आयोजनों में विविधता बढ़ी। व्यापारिक मानसिकता, परिश्रमशीलता और सामुदायिक संगठन की जो विशेषताएं शरणार्थियों के बीच थीं, उन्होंने हरियाणा के सामाजिक जीवन को नई ऊर्जा दी। सांस्कृतिक आदान–प्रदान की इस प्रक्रिया ने स्थानीय समाज को अधिक खुला, बहुआयामी और अनुकूलनशील बनाया। इस प्रकार विभाजन से उत्पन्न सांस्कृतिक परिवर्तन केवल परंपराओं के विस्थापन की कहानी नहीं है, बल्कि यह नई सांस्कृतिक पहचान के निर्माण की प्रक्रिया भी है।

महिलाओं की स्थिति पर विभाजन का प्रभाव अत्यंत संवेदनशील और गंभीर रहा। विभाजन के दौरान महिलाओं को हिंसा, अपहरण, यौन शोषण, परिवार से बिछड़ने और सामाजिक असुरक्षा जैसी भयावह परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। अनेक महिलाओं ने अपने परिवार, सम्मान और पहचान की रक्षा के लिए असाधारण मानसिक और भावनात्मक संघर्ष झेले। यह पीड़ा केवल व्यक्तिगत नहीं थी, बल्कि पूरे समाज की सामूहिक स्मृति का हिस्सा बन गई। हरियाणा में आकर बसने वाली शरणार्थी महिलाओं को पुनर्वास के बाद भी जीवन को नए सिरे से संगठित करना पड़ा। उन्हें टूटे हुए परिवारों को संभालना, बच्चों का पालन–पोषण करना, सीमित संसाधनों में जीवन चलाना और नए सामाजिक वातावरण में स्वयं को स्थापित करना पड़ा। इसी प्रक्रिया में महिलाओं की भूमिका अधिक सक्रिय और महत्त्वपूर्ण होकर सामने आई। वे केवल पीड़िता के रूप में नहीं रहीं, बल्कि पुनर्निर्माण की सहभागी बनीं।[10] अनेक महिलाओं ने घरेलू कार्यों के साथ–साथ छोटे व्यवसायों, हस्तशिल्प, पारिवारिक उद्यमों और सामाजिक सहयोग के कार्यों में भाग लिया। इस प्रकार विभाजन ने महिलाओं को अत्यंत कष्ट दिए, परंतु उसी अनुभव ने उन्हें सामाजिक और आर्थिक स्तर पर अधिक सक्रिय भूमिका

[9] कौर, रविंदर. (2007). 1947 के बादः दिल्ली में पंजाबी प्रवासियों के बीच विभाजन की कथाएँ. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, पृ. 75–76.

[10] मेनन, रितु, एवं भसीन, कमला. (1998). सीमाएँ और सरहदें: भारत विभाजन में महिलाएँ. काली फॉर वुमेन, नई दिल्ली, पृ. 58–59.

निभाने के लिए भी प्रेरित किया। अंततः यह कहा जा सकता है कि भारत विभाजन ने हरियाणा के सामाजिक जीवन को गहराई से पुनर्गठित किया। जनसंख्या संरचना का परिवर्तन, सामुदायिक संबंधों का पुनर्निर्माण, सांस्कृतिक मिश्रण और महिलाओं की बदली हुई भूमिका, ये सभी इस ऐतिहासिक घटना के स्थायी सामाजिक प्रभाव थे।[11] विभाजन ने हरियाणा समाज को पीड़ा, विस्थापन और असुरक्षा का अनुभव कराया, परंतु साथ ही उसने समाज को नए रूप में संगठित होने, विविधता को स्वीकार करने और पुनर्निर्माण की दिशा में आगे बढ़ने की प्रेरणा भी दी।

आर्थिक प्रभाव

भारत विभाजन का हरियाणा की अर्थव्यवस्था पर गहरा और दीर्घकालिक प्रभाव पड़ा। यह प्रभाव केवल तत्कालीन अव्यवस्था या संसाधनों के पुनर्वितरण तक सीमित नहीं था, बल्कि इसने भूमि स्वामित्व, कृषि विकास, व्यापारिक संरचना, शहरीकरण और रोजगार के अवसरों को नए रूप में संगठित किया। विभाजन के बाद जब पश्चिमी पंजाब से बड़ी संख्या में हिंदू और सिख शरणार्थी हरियाणा क्षेत्र में आकर बसे, तब उनके पुनर्वास की सबसे बड़ी चुनौती आजीविका और संपत्ति से जुड़ी थी। इस संदर्भ में भूमि का पुनर्वितरण एक महत्वपूर्ण आर्थिक प्रक्रिया के रूप में सामने आया। पाकिस्तान चले गए मुस्लिम जमींदारों, किसानों और भू–स्वामियों द्वारा छोड़ी गई भूमि को सरकार ने पुनर्वास नीति के अंतर्गत शरणार्थियों को आवंटित किया। इससे भूमि स्वामित्व की पुरानी संरचना में बदलाव आया और कृषि संसाधनों का नया वितरण संभव हुआ। अनेक शरणार्थी परिवार, जो अपने मूल स्थानों पर खेती से जुड़े थे, उन्हें हरियाणा में कृषि भूमि मिलने के बाद पुनः उत्पादन प्रक्रिया से जुड़ने का अवसर मिला। इस परिवर्तन ने न केवल विस्थापित लोगों को आर्थिक आधार दिया, बल्कि हरियाणा की कृषि अर्थव्यवस्था को भी नई सक्रियता प्रदान की। भूमि के पुनर्वितरण से ग्रामीण अर्थव्यवस्था में नई ऊर्जा आई और उत्पादन संबंधों में परिवर्तन देखा गया।[12]

कृषि क्षेत्र में विभाजन के बाद आए परिवर्तन विशेष रूप से उल्लेखनीय थे। पश्चिमी पंजाब से आए अनेक शरणार्थी अपेक्षाकृत विकसित कृषि पद्धतियों, सिंचाई तकनीकों और व्यावसायिक खेती के अनुभव के साथ आए थे। उन्होंने हरियाणा में उपलब्ध भूमि और संसाधनों का उपयोग अधिक संगठित और उत्पादनोन्मुख ढंग से किया। इससे कृषि के पारंपरिक स्वरूप में परिवर्तन आने लगा। खेती में परिश्रम, नवाचार और बाजारोन्मुख दृष्टिकोण का प्रवेश हुआ। शरणार्थियों ने कृषि को केवल जीविका के साधन के रूप में नहीं देखा, बल्कि उसे आर्थिक

[11] बुटालिया, उर्वशी. (1998). खामोशी का दूसरा पक्षः भारत विभाजन की आवाजें. ड्यूक यूनिवर्सिटी प्रेस, डरहम, पृ. 42–43.
[12] सिंह, जसबीर. (2010). भारत में शरणार्थी और पुनर्वास. रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, पृ. 86–87.

उन्नति के साधन के रूप में विकसित किया। धीरे–धीरे बेहतर बीज, सिंचाई सुविधाओं, कृषि उपकरणों और उन्नत पद्धतियों के प्रयोग की प्रवृत्ति बढ़ी। यही वह आधार था जिसने आगे चलकर हरियाणा में कृषि आधुनिकीकरण और हरित क्रांति के लिए अनुकूल वातावरण तैयार किया।[13] इस प्रकार विभाजन के कारण उत्पन्न कृषि परिवर्तन केवल तत्कालीन पुनर्वास का परिणाम नहीं थे, बल्कि उन्होंने हरियाणा को बाद के दशकों में एक समृद्ध कृषि राज्य बनने की दिशा में अग्रसर किया।

व्यापार और उद्योग के क्षेत्र में भी विभाजन ने गहरा प्रभाव छोड़ा। पाकिस्तान से आए शरणार्थियों में बड़ी संख्या ऐसे लोगों की थी जो व्यापार, लघु उद्योग, दस्तकारी और शहरी आर्थिक गतिविधियों से जुड़े हुए थे। अपने मूल स्थानों पर संपत्ति और व्यवसाय खो देने के बाद उन्होंने हरियाणा के नगरों और कस्बों में नए सिरे से व्यवसाय स्थापित करने का प्रयास किया। इस प्रयास ने क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में एक नई गतिशीलता उत्पन्न की। छोटे स्तर के उद्योग, दुकानों, सेवा व्यवसायों और उत्पादन इकाइयों की स्थापना ने स्थानीय बाजारों को सक्रिय बनाया। शरणार्थी समुदायों की उद्यमशीलता, जोखिम उठाने की क्षमता और आर्थिक संगठन की प्रवृत्ति ने हरियाणा के अनेक क्षेत्रों में व्यापारिक विस्तार को गति दी। इसके परिणामस्वरूप शहरी केंद्रों का विकास तेज हुआ और नगर आर्थिक गतिविधियों के नए केंद्र बनकर उभरे। इस प्रक्रिया ने स्थानीय अर्थव्यवस्था को केवल पुनर्जीवित ही नहीं किया, बल्कि उसे अधिक विविध और व्यापक भी बनाया। विभाजन के बाद का यह व्यापारिक विस्तार हरियाणा के आर्थिक इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ के रूप में देखा जा सकता है।[14]

रोजगार के अवसरों की दृष्टि से भी विभाजन का प्रभाव महत्वपूर्ण रहा। प्रारंभिक चरण में विस्थापन के कारण बेरोजगारी, निर्धनता और आजीविका का संकट अवश्य उत्पन्न हुआ, परंतु पुनर्वास और आर्थिक पुनर्गठन की प्रक्रिया ने धीरे–धीरे नए अवसरों को जन्म दिया। कृषि के पुनर्संगठन, भूमि के पुनर्वितरण, नए व्यवसायों की स्थापना और लघु उद्योगों के विस्तार ने बड़ी संख्या में लोगों को रोजगार उपलब्ध कराया। स्थानीय निवासियों और शरणार्थियों दोनों के लिए नए आर्थिक क्षेत्र खुले। ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि आधारित कार्यों में वृद्धि हुई, जबकि नगरों में व्यापार, परिवहन, निर्माण और सेवा क्षेत्र का विस्तार हुआ। इस प्रकार

[13] टैल्बोट, इयान, एवं सिंह, गुरहरपाल. (2009). भारत का विभाजन. कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, पृ. 20–21.

[14] कौर, रविंदर. (2007). 1947 के बादः दिल्ली में पंजाबी प्रवासियों के बीच विभाजन की कथाएँ. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, पृ. 78–79.

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

रोजगार की संरचना पहले की अपेक्षा अधिक बहुआयामी होती गई।[15] आर्थिक गतिविधियों के इस विस्तार ने हरियाणा में धीरे–धीरे स्थिरता, आत्मनिर्भरता और विकास का वातावरण बनाया। शरणार्थियों ने अपनी मेहनत और अनुभव के बल पर न केवल अपनी आजीविका को पुनर्स्थापित किया, बल्कि क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था को भी मजबूत किया।

शरणार्थी पुनर्वास और चुनौतियाँ

भारत विभाजन के पश्चात् शरणार्थियों का पुनर्वास भारतीय सरकार के सामने सबसे बड़ी मानवीय और प्रशासनिक चुनौती के रूप में उभरा। लाखों विस्थापित लोगों को तत्काल आश्रय, भोजन, रोजगार और सुरक्षा प्रदान करना एक जटिल कार्य था, जिसके लिए केंद्र और राज्य स्तर पर अनेक योजनाएँ और नीतियाँ लागू की गईं। हरियाणा क्षेत्र, जो उस समय पूर्वी पंजाब का हिस्सा था, में बड़ी संख्या में पश्चिमी पंजाब से आए हिंदू और सिख शरणार्थियों को बसाया गया। सरकार ने इन शरणार्थियों के पुनर्वास के लिए खाली पड़ी भूमि का आवंटन किया, अस्थायी एवं स्थायी आवास की व्यवस्था की तथा उन्हें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने के लिए विभिन्न रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने का प्रयास किया। शरणार्थी शिविरों की स्थापना की गई, जहाँ प्रारंभिक चरण में भोजन, चिकित्सा और सुरक्षा जैसी बुनियादी सुविधाएँ प्रदान की गईं।[16]

भूमि आवंटन पुनर्वास नीति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था, जिसके अंतर्गत पाकिस्तान से आए किसानों को कृषि योग्य भूमि दी गई ताकि वे पुनः अपनी आजीविका स्थापित कर सकें। शहरी क्षेत्रों में आए शरणार्थियों को दुकानों, छोटे उद्योगों और व्यापारिक गतिविधियों के लिए प्रोत्साहित किया गया। इसके अतिरिक्त, सरकार ने ऋण, अनुदान और अन्य आर्थिक सहायता के माध्यम से उन्हें नए व्यवसाय शुरू करने में सहायता प्रदान की। इस प्रकार पुनर्वास केवल भौतिक बसावट तक सीमित नहीं था, बल्कि यह आर्थिक पुनर्स्थापन और सामाजिक पुनर्गठन की एक व्यापक प्रक्रिया थी।[17] हालांकि, इस पुनर्वास प्रक्रिया में अनेक चुनौतियाँ भी सामने आईं। प्रारंभिक वर्षों में संसाधनों की भारी कमी थी, जिसके कारण सभी शरणार्थियों को पर्याप्त आवास, रोजगार और मूलभूत सुविधाएँ उपलब्ध कराना कठिन था। कई शरणार्थियों को लंबे समय तक अस्थायी शिविरों में रहना पड़ा, जहाँ जीवन की परिस्थितियाँ अत्यंत कठिन थीं। प्रशासनिक स्तर पर भी समन्वय की कमी, भूमि वितरण में असमानता, भ्रष्टाचार

---

[15] ब्रास, पॉल आर. (2003). समकालीन भारत में हिन्दू–मुस्लिम हिंसा का निर्माण. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, पृ. 98–99.

[16] सिंह, जसबीर. (2010). भारत में शरणार्थी और पुनर्वास. रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, पृ. 82–83.

[17] कौर, रविंदर. (2007). 1947 के बाद: दिल्ली में पंजाबी प्रवासियों के बीच विभाजन की कथाएँ. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, पृ. 74–75.

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

और विलंब जैसी समस्याएँ देखी गईं। अनेक मामलों में भूमि के स्वामित्व से संबंधित विवाद उत्पन्न हुए, जिससे पुनर्वास प्रक्रिया जटिल हो गई।

सामाजिक स्तर पर भी शरणार्थियों को नई परिस्थितियों के साथ सामंजस्य स्थापित करने में कठिनाई हुई। उन्हें अपने पुराने सामाजिक संबंधों, सांस्कृतिक परिवेश और पारिवारिक संरचना से अलग होकर एक नए वातावरण में जीवन प्रारंभ करना पड़ा। स्थानीय समुदायों के साथ प्रारंभिक स्तर पर दूरी और प्रतिस्पर्धा की भावना भी देखी गई, विशेषकर संसाधनों के सीमित होने के कारण।[18] इसके अलावा, विभाजन के दौरान हुए मानसिक आघात और पीड़ा ने शरणार्थियों के मनोवैज्ञानिक पुनर्वास को और अधिक चुनौतीपूर्ण बना दिया। फिर भी, समय के साथ शरणार्थियों ने अपनी मेहनत, कौशल और दृढ़ इच्छाशक्ति के माध्यम से इन चुनौतियों का सामना किया और स्वयं को समाज में स्थापित किया। उन्होंने न केवल अपनी आर्थिक स्थिति को पुनः सुदृढ़ किया, बल्कि हरियाणा के सामाजिक और आर्थिक विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया।[19] इस प्रकार शरणार्थी पुनर्वास की प्रक्रिया एक ओर कठिनाइयों से भरी रही, वहीं दूसरी ओर यह पुनर्निर्माण, अनुकूलन और विकास का एक प्रेरणादायक उदाहरण भी बनी।

निष्कर्ष

भारत विभाजन 1947 हरियाणा के सामाजिक और आर्थिक इतिहास में एक निर्णायक मोड़ के रूप में उभरकर सामने आया, जिसने इस क्षेत्र की संरचना, विकास की दिशा और सामुदायिक जीवन को गहराई से प्रभावित किया। यह घटना केवल सीमाओं के पुनर्निर्धारण तक सीमित नहीं थी, बल्कि इसने जनसंख्या के बड़े पैमाने पर विस्थापन के माध्यम से सामाजिक ताने–बाने को पूरी तरह से बदल दिया। हरियाणा में शरणार्थियों के आगमन ने जनसंख्या संरचना, जातीय और धार्मिक संतुलन तथा सामाजिक संबंधों को पुनर्परिभाषित किया। प्रारंभिक कठिनाइयों, तनाव और संसाधनों की कमी के बावजूद स्थानीय समाज और शरणार्थियों के बीच धीरे–धीरे समन्वय स्थापित हुआ, जिसने एक नए सामाजिक ढांचे को जन्म दिया। सांस्कृतिक स्तर पर भी यह परिवर्तन स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, जहाँ विविध परंपराओं, भाषाओं और जीवनशैलियों का समावेश हुआ और एक मिश्रित सांस्कृतिक पहचान विकसित हुई।[20] आर्थिक दृष्टि से विभाजन ने हरियाणा के लिए चुनौती और अवसर दोनों प्रस्तुत किए। भूमि

---

[18] पांडेय, ज्ञानेंद्र. (2001). विभाजन को याद करना: हिंसा, राष्ट्रवाद और इतिहास. कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, पृ. 36–37.

[19] टैल्बोट, इयान, एवं सिंह, गुरहरपाल. (2009). भारत का विभाजन. कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, पृ. 22–23.

[20] सिंह, जसबीर. (2010). भारत में शरणार्थी और पुनर्वास. रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, पृ. 82–83.

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

के पुनर्वितरण, कृषि प्रणाली में सुधार, व्यापार और उद्योगों के विकास तथा रोजगार के नए अवसरों ने क्षेत्र की अर्थव्यवस्था को नई दिशा दी। शरणार्थियों की मेहनत, कौशल और उद्यमशीलता ने हरियाणा को कृषि और औद्योगिक विकास की ओर अग्रसर किया। प्रारंभिक अव्यवस्था और संघर्ष के बावजूद, इस क्षेत्र ने पुनर्निर्माण की प्रक्रिया को सफलतापूर्वक अपनाया और धीरे–धीरे आर्थिक स्थिरता प्राप्त की। यही कारण है कि आज हरियाणा भारत के अग्रणी और विकसित राज्यों में गिना जाता है। यह अध्ययन इस तथ्य को रेखांकित करता है कि अत्यंत प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद समाज में अनुकूलन, पुनर्गठन और प्रगति की क्षमता होती है। भारत विभाजन जैसी त्रासदी ने जहां एक ओर गहरे घाव दिए, वहीं दूसरी ओर उसने पुनर्निर्माण, सहअस्तित्व और विकास की नई संभावनाओं को भी जन्म दिया।[21] इस प्रकार हरियाणा का अनुभव यह दर्शाता है कि ऐतिहासिक संकट केवल विनाश का कारण नहीं होते, बल्कि वे परिवर्तन और प्रगति की प्रक्रिया को भी प्रेरित करते हैं।

[21] पांडेय, ज्ञानेंद्र. (2001). विभाजन को याद करनाः हिंसा, राष्ट्रवाद और इतिहास. कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, पृ. 36–37.